॥ श्री राधा कृष्णाभ्यां नमः ॥

श्री कृष्णानन्द सागर

(सचित्र मोटा टाइप)

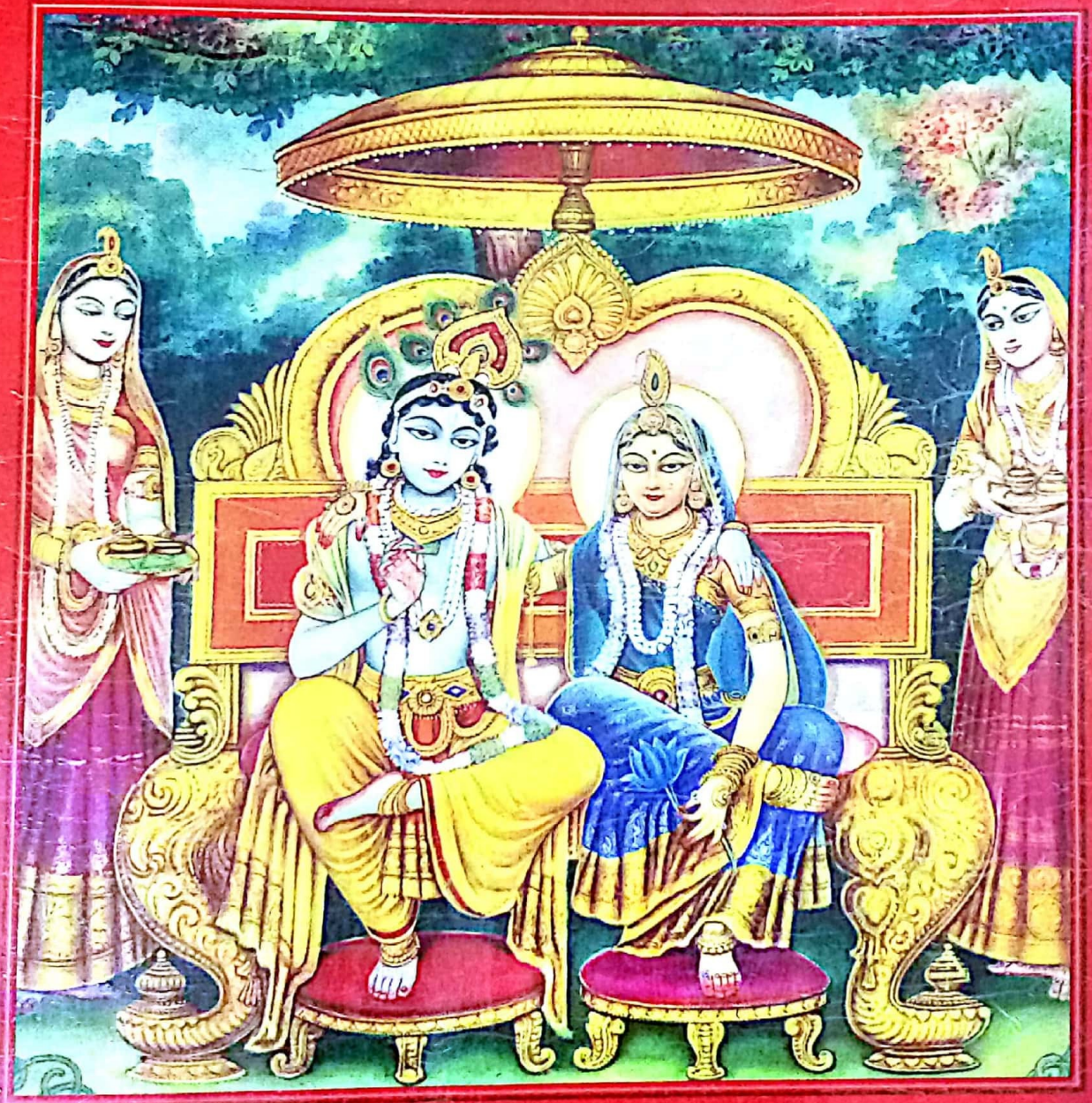

श्री कृष्ण प्रणामी मन्दिर

प्रज्ञापीठ परमानन्द धाम, इकदिल-इटावा (उ.प्र.)

श्रीकृष्ण प्रणामी प्रज्ञापीठ परमानन्द धाम
के शुभ स्थापना के उपलक्ष्य में

श्री कृष्ण प्रणामी धर्म जागनी महोत्सव 2009

के शुभ अवसर पर सुन्दरसाथ एवं
भगवत् प्रेमियों को सादर सप्रेम समर्पित

प्रथम संस्करण – १००० (एक हजार मात्र)

माघ पूर्णमासी विक्रम संवत् २०६५

विजयाभिनन्द बुद्ध जी शाका : ३३१

मूल्य – दो सौ पचास रूपये मात्र (२५०/–)

सर्वाधिकार सुरक्षित

प्राप्त स्थान : १. श्रीकृष्ण प्रणामी मन्दिर, प्रज्ञापीठ, परमानन्दधाम
इकदिल, इटावा(उ०प्र०) पिन कोड २०६१२६
२. कविवर विशाल, निवादा, धांधू, औरैया (उ०प्र०)

प्रकाशक : परमपूज्य श्री परमानन्द जी महाराज
मुद्रक : श्री अरविन्द गुप्ता प्रणामी, लखनऊ

भूमिका

श्रीकृष्णा नन्द सागर में अद्वितीय प्रेमाधार सर्वज्ञ, सर्वशक्तिमान, सर्वेश्वर, अचिन्त्यानन्त नित्य लीला बिहारी रसामृत सिन्धु, अनन्तानन्त, मेमाधार, सच्चिदानन्द, धन अक्षरातीत, परमात्मा श्रीकृष्ण की अह्लादिनी शक्ति स्वरूपा रासेश्वरी आनन्द चिन्मय बृन्दावन विनोदिनी श्री श्यामा जी महारानी (राधाजी) जो कि साक्षात श्री कृष्ण भक्ति प्रदायनी तथा सर्वमंगल प्रदायनी भक्ति वत्सला हैं। उन युगुल स्वरूप का गुण गौरव लीला चरित्रों का सुमधुर भक्ति पूर्ण गायन किया गया है। इस दृष्टि से कृष्णानन्द सागर साक्षात परमात्मा श्रीकृष्ण का युगुल स्वरूपीय श्री विग्रह है।

श्रीकृष्णानन्द सागर के अन्तर्गत हिन्दी साहित्य की दृष्टि से अत्यन्त सरल लोकप्रिय भावनाओं के द्वारा सच्चिदानन्द धन अक्षरातीत परमात्मा श्रीकृष्ण की विभिन्न लीला चरित्रों का वर्णन है। प्रस्तुत ग्रन्थ में मुख्य रूप से आठ सर्ग हैं। प्रत्येक सर्ग में परमात्मा की नित्यलीला के अन्तर्गत महाकारण लीला तथा उनके अंशा, अंश आवेश, कला पूर्ण और परिपूर्णतम् आदि अवतारों का विधिवत् वर्णन है। ग्रन्थ के प्रथम आनन्द नामक सर्ग में परमात्मा श्रीकृष्ण के अनेकों भक्ति पूर्ण नामों का वर्णन करते हुये युगुल स्वरूप श्री राधाकृष्ण को श्री राजश्यामा नाम से भी गायन किया गया है।

यथा-चौपाई

बन्दौ प्रथम राज श्री श्यामा। पुनि पुनि करहुँ प्रेम परनामा।
युगुल स्वरूप परम छबि भोरी। श्यामल श्याम राधिका गोरी।।

ग्रन्थ रचनाकार ने बड़े ही अनुराग पूर्ण हृदय से परमात्मा नाम केचिन्तन एवं नाम महिमा का वर्णन किया है जो कि पौराणिक एवं शास्त्रीय दृष्टि से अकाट्य प्रमाणिक विशेष भाववुक्त है।

दोहा - **प्रभु के जेतक नाम हैं, बरणे वेद पुराण।**
कृष्ण नाम सबसे परम, श्रुति मुनि कहैं बखान।।

श्लोक - **कृष्णेति मंगलं नाम यस्य वाचि प्रवर्तते।**
भस्मी भवन्ति सद्यस्तु महापातक कोटया।।

चौपाई - **कोटि जन्म अघ नाशय कैसे।**
काष्ट ढेर लघु पावक जैसे।।

श्लोक - 1. **सर्वेषमापि यज्ञानां लक्षाणि च व्रतानि च।**
तीर्थ स्नानानि सर्वाणि तपांस्यनशनाचि।।

2. **वेद पाठ सहस्त्राणि प्रादक्षिण्यं भुवः शतम।**
कृष्ण नाम जपस्यास्य कला नार्हन्ति षोड्शीम्।

3. **अश्वमेध सहस्त्रेभ्या फलं कृष्ण जपस्य च।**
वरं तेभ्या पुनर्जन्म ना तो भक्त पुर्नभवः।।

(ब्र0वैपु0 अ0 11 श्लोक सं0 38, 39, 40) पृष्ठ संख्या – 636

ब्रह्म वैवर्तपुराणानुसार जिसकी जिह्वा पर कृष्ण, कृष्ण–कृष्ण ऐसा मंगल नाम वर्तमान रहता है। उसके महापातक तुरन्त ही नष्ट हो जाते हैं। कृष्ण नाम जप का फल सहस्रों अश्वमेघ यज्ञों के फल से

श्री श्रेष्ठ है। यज्ञों से मनुष्य को पुनर्जन्म की प्राप्ति होती है, परन्तु नाम जप से भक्त आवागमन से मुक्त हो जाता है। यज्ञ, व्रत, तीर्थ स्नान सभी प्रकार के जप, तप, उपवास, वेद, पाठ सैकड़ों बार पृथ्वी की प्रदक्षिणा ये सभी इस कृष्ण नाम जप की सोलहवीं कला की समानता नहीं कर सकते।

सत्यवती नन्दन कृष्णाद्वय पाइन जी ने ब्रह्मवैवर्त पुराणा के श्री कृष्ण जन्म खण्ड में अपने सुमधुर कंठ से इन श्लोकों में गायन किया है जो कि सिद्ध करता है कि कृष्ण नाम जप की महिमा सर्वोपरि है।

नाम की इस प्रकार की दिव्यता को दर्शाता हुआ कृष्णानन्द सागर भी मानो उपर्युक्त श्लोकों से अछूता नहीं रहा गया। इस ग्रन्थ में बड़ी ही सरल भाव पूर्ण गायन इस प्रकार किया है।

यथा-चौपाई

कृष्ण नाम प्रभाव अपारा। सहजहि जीव होय भव पारा।
साधन अन्य करे हित लाई। जप, तप योग सु ध्यान लगाई।।
पूजन व्रत कीजै उपवासा। दान पुण्य अरु तीरथ वासा।।
सब कर फल अति न्यून दिखाई। कृष्ण नाम महिला अधिकाई।।
नर तन पाय कृष्ण उर नाही। जन्म पाय सो मृतक कहाहीं।।

चौपाई -

तेहि प्रणाम फल सुजन महाना। अश्वमेघ इक सहस समाना।।
अश्वमेघ कर पुनि तनुधारी। जपहि कृष्ण नहि जग संचारी।।

उपर्युक्त चौपाइयों के अनुसार परमात्मा श्रीकृष्ण के नाम जप से बढकर पृथ्वी पर और दूसरा कोई साधन आत्म–कल्याणार्थ नहीं है। इस आनन्द सर्ग के अन्तर्गत राजा क्वास ने नर्क की यातनाओं को देखते हुये देवर्षि नारद के द्वारा कृष्ण मंत्र की दीक्षा लेकर अपने का ही नहीं बल्कि समस्त नगरवासियों एवं नरक की यातनाओं को भोगते हुये अपने पूर्वजों का भी उद्धार किया। इस प्रकार आनन्द सर्ग के अन्तर्गत अनेकों आत्म उद्धार के लिये रासेश्वर श्याम सुन्दर की भक्ति के सुगम उपायोकागायन किया गया है।

श्री कृष्णानन्द सागर के सर्ग संख्या दो में सृष्टि से लेकर चार प्रकार की प्रलय का वर्णन बड़ी ही सरल भाषा में किया गया तथा व्यक्त और अव्यक्त का वर्णन करते हुये अव्यक्त से भी अति परे अक्षर ब्रह्म के चतुर्थ पादों का वर्णन करते हुय परमात्मा श्रीकृष्ण के नित्य धाम परमधाम की ओर संकेत किया गया है।

जिसमें सर्वप्रथम विराट पुरूष का वर्णन करते हुये गर्भेदिक समुद्र शेषशायी नारायण पाताल, महातल, रसातल, तलातल, सुतल, वितल अतल लोक तथा पृथ्वी (मृत्युलोक) भुर्वलोक, स्वर्ग, महर, जन, तप, सत्यलोक (वैकुण्ठ) अष्ट आवरण ओंकार ज्योति स्वरूप गायत्री, महानारायण, महाविष्णु तथा प्रणवोमेत्यअक्षर जो पंच मुख सदाशिव के नाम से जाना जाता है। इन्ही सदाशिव को महाकाल चिदाकाश निराकार – आदि रूपों से शास्त्रों में वर्णन मिलता है। राम चरित मानस में भी उत्तर काण्ड के अन्तर्गत रूद्राष्टक में भी इन सदाशिव की ओर ही संकेत किया है।

यथा – **निराकार, मोंकार मूलं तुरीयं गिराग्यान गोतीत मीशं गिरीशम्।**
करालं महाकाल कालं कृपालं, गुणागार संसार पार नतोस्यम्।।

(मा0 प्र0 संख्या 995)

इसी प्रकार ब्रह्मवैवर्त पुराण के अन्तर्गत ब्रह्म खण्ड में पंचमुख सदाशिव के परात्पर परमात्मा श्री कृष्ण के वाम पार्श्व से प्राकट्य वर्णित है।

इस प्रकार यह सिद्ध होता है कि पुराणों में परमात्मा श्रीकृष्ण साकार, निराकार व्यक्त अव्यक्त से भी अति परे हैं। श्रीकृष्ण स्वरूप श्री शुकदेव जी महाराज ने महाराज परीक्षत को मुक्तकंठ से व्यक्त किया और व्यक्त अव्यक्त (साकारा–निराकार) को भगवान की माया द्वार रचित बताया है।

यथा– **अमुनी भगवद्रूपे मया ते अनु वर्णिते।**
उभे अपि न गृहन्ति माया स्रष्टे वि पश्चितः।।

श्री शुकदेव जी महाराज कहते हैं कि राजन मैंने तुम्हे भगवान के व्यक्त और अव्यक्त, स्थूल और सूक्षम जिन दोनों रूपों का वर्णन सुनाया है, यह दोनों भगवान की माया द्वारा रचित हैं। इसलिए विद्वान पुरूष इन दोनों को ही ब्रह्म रूप में स्वीकार नहीं करते हैं। इस कथानक के अनुसार श्री शुकदेव जी महाराज का लक्ष परीक्षत की आत्म कल्याण के लिए परात्पर परमात्मा श्रीकृष्ण के स्वरूप की ओर संकेत करना है। प्रस्तुत श्रीकृष्णानन्द सागर में भी परात्पर परमात्मा श्रीकृष्ण के नित्य स्वरूप श्री परमधाम के मूल भवन मूल मिलावा के मध्य सिहांसनासीन दर्शाय गया है जो कि शास्त्र सम्मतिहैं।

यथा – चौपाई –

सिंहासन तेहि मध्य सुहावा। कंचन रंग सु शोभा पावा।।
तेहिपर युगुल स्वरूप विराजे। श्यामा राज सदा छवि छाजे।।

श्रीमद् भगवत गीता में भी पन्द्रहवें अध्याय के छठवें श्लोक में योगेश्वर भगवान श्रीकृष्ण ने अर्जुन को अपना नित्यधाम परमधाम को ही समझाकर स्पष्ट शबदों में वर्ण्ति कर दिया कि परमधाम में पहुँचकर फिर वापिस नहीं आना पड़ता।

यथा – **यद् गत्वा न निवर्त्तन्ते तद् धाम परमं मम्।**

इसी प्रकार कठोपनिषद बल्ली दो में परमात्माओं के परमधाम में विराजमान होना विधिवत् वर्णन है।

यथा – श्लोक – **आसीनो दूरं व्रजति, शयानो याति सर्वतः।**
कस्तं मदामदं देवं, मदन्यो ज्ञातुमर्हति।।

परमेश्वर अपने परमधाम में रहते हुये भी भक्त आधीनतावश उनकी पुकार सुनते ही दूर चले जाते हैं। परमधाम में निवास करने वाले पार्षद भक्तों की दृष्टि में वहाँ शयन करते हुये ही वे सब ओर चलते रहते हैं। उनकी सर्वव्यापकता ऐसी है कि बैठे भी वहीं है, दूर देश में चलते भी वही हैं, सोते भी वही हैं और सबओर आते–जाते भी वही हैं। वे सर्वत्र सब रूपों में नित्य अपनी महिमा में स्थिति है।

ब्रह्मवैवर्त पुराण के अन्तगत भी परमात्मा श्रीकृष्ण के स्वरूप का वर्णन कितना सुन्दर किया गया है।

यथा – श्लोक – **चिदादित्यं किशोरागं परे धाम्नि विराजितम्।**
स्वरूपं सच्चिदानदं, निर्विकार सनातनम्।।

उपर्युक्त सभी शास्त्रोक्त प्रमाणो से परमात्मा श्रीकृष्ण के परात्पर स्वरूप का कृष्णानन्द सागर में वर्णन बड़े ही तत्व विवेचना युक्त है जो कि बहुत ही सुगमता से समझा जा सकता है।

उपर्युक्त सदाशिव से परे सनातन अव्याकृत ब्रह्म सत्यलोक (कबीर साहब का मुक्ति स्थान) पुष्पकर द्वीप, श्वेत द्वीप, प्रतिबिम्बित गोलोक धाम, सबिलकधाम धाम, केवलधाम अक्षर ब्रह्म का सत् स्वरूप अक्षरधाम परम धाम में आठों सागर व भूमिकाओं का वर्णन व पुखराज पर्वत, माणिक पर्वत, यमुना जी के सात घाट, यमुना जी के केल व वट पुल का वर्णन तत्पश्चात् यमुना जी का हौजकोसर तालाब में गिरना, चादनी चौक रंग महलकी दस भूमिकाओं का वर्णन ही नहीं बल्कि परमधाम के पच्चीस पक्षों का ग्रन्थ रचनाकार ने बड़े ही सरल ढंग से गायन किया है।

श्रीकृष्णानन्द सागर के तृतीय महाकारण सर्ग में समस्त ब्रह्माण्डों की रचना का मूल कारण है। इसलिए इसे महाकारण नाम दिया गया है। इस सर्ग में सच्चिदानन्द धन अक्षरातीत के सत अंग अक्षर ब्रह्म चित अंस परमधाम आनन्द अंग श्री श्यामा जी हैं। परमधाम के मूल मन्दिर में विराजमान परमात्मा श्रीकृष्ण और आनन्द अंग श्री श्यामा सखियों के साथ प्रेम सम्बाद हुआ कि मेरा प्रेम बड़ा है। परमात्मा श्रीकृष्ण ने कहा ब्रह्मांगनाओं मेरा ही प्रेम सर्वोपरि है। परमात्मा श्रीकृष्ण ने अपना प्रेम सर्वोपरि सिद्ध करने के लिए एक बार अपने सत अंग अक्षर ब्रह्म जो नित्य चाँदनी चौक में खड़े होकर दर्शनार्थ आता है। ब्रह्मांगनाओं को उन अक्षर ब्रह्म की झलक दिखाई। अक्षर ब्रह्म को देखकर ब्रह्म आत्माओं ने श्रीकृष्ण जी से कहा कि हे स्वामी आपके समान यह पुरूष कौन है, जो अब तक हम ब्रह्मांगनाओं से छिपा रखा, यह पुरूष आपके समान ही है, इसकी लीला क्या है। धाम क्या है, स्वभाव क्या है, हम ब्रह्मांगनाये यह सब जानने के लिए अपना मनोरथ आप से प्रकट करती हैं।

इधर अक्षरब्रह्म ने भी परमात्मा श्रीकृष्ण के साथ ब्रह्मांगनाओं की लीला देखने की इच्छा की, इसलिए अक्षर ब्रह्म और ब्रह्मांगनाओं के मनोरथों को पूर्ण करने का संकल्प किया। इन दोनों के मनोरथ को पूर्ण करने के लिए ब्रह्म आत्माओं को अक्षर ब्रह्म की लीला, धाम आदि को न देखने के लिए कहा, परन्तु ब्रह्मआत्माओं ने बार–बार अपना मनोरथ सिद्ध करने के लिए कहा। परमात्मा श्रीकृष्ण ने कहा है ब्रह्मांगनाओं अक्षर ब्रह्म की लीला बड़ी ही दुसह दुःखपूर्ण है। यह कहकर प्रभु ने तीन बार मना किया। परन्तु मना करने पर भी ब्रह्मांगनाओं ने मनोरथ सिद्धी के लिये पुनः प्रार्थना की और दुख पूर्ण अक्षर की स्वाप्निक लीला देखने की हठ नहीं छोड़ी।

यथा - हे प्रभु दुःख दिखावहु मोही। इच्छा प्रबल मोर मन जोही।।
दर्शावहु दुख मय संसारा। करहु मनोरथ पूर्ण हमारा।।
दोहा - प्रेम भरे प्रिय प्रियन के, सुन प्रीतम प्रिय बैन।
पाय प्रेम प्रभु अगम पुनि, कीन्ह कृपा के नैन।।

इस प्रकार ग्रन्थ में काव्य कला की दृष्टि से इस छिपे हुये अध्यात्म तत्व की रचना बड़ी ही मनोहर और मार्मिक ढंग से की है।

ग्रन्थ के चतुर्थ ब्रज सर्ग के अन्तर्गत परमात्मा श्रीकृष्ण के संत अंग अक्षर ब्रह्म के संकल्प में करोड़ों ब्रह्माण्डों का पल मात्र में सृजन होकर पुनः प्रलय हो जाना तथा इस ब्रह्माण्ड में परमधाम के मूल मिलावा में परमात्मा श्रीकृष्ण के चरणों तले बैठी हुई ब्रह्मांगनाओं को दुख रूपी संसार (अक्षरब्रह्म

की लीला) का मनोरथ पूर्ण करने हेतु सत का आवरण डाल दिया, जिससे प्रभु के चरणों तले ही बैठी अक्षर ब्रह्म का चिन्तन करने लगी, जिसके फलस्वरूप ब्रह्मआत्माओं की सुरति अक्षरब्रह्म की स्वप्नमयी लीलाओं को देखने में लग गई। अक्षर ब्रह्म की दुख पूर्ण लीला में नेत्र भ्रमण मात्र से हजारों महाविष्णु जिनके एक लोम कूप में असंख्यों ब्रह्माण्ड हैं, नष्ट हो जाते हैं तथा सैकड़ों सदाशिव भी अक्षर ब्रह्म के नेत्र भ्रमणमात्र से नष्ट हो जाते हैं।

यथा - महाविष्णु सहस्रणि, महाशम्भू शतानिच।
नेत्र भ्रमण मेवास्य, तद्अक्षरं परं पदम्।।

श्री राम चरित मानस के अनुसार सदाशिव जी को पंच मुखी वर्णन किया गया है। इन्ही सदाशिव को शिव पुराण में प्रणव के नाम से वर्णन किया गया है।

चौपाई - विष्णु चार भुज, विधि मुख चारी। विकट वेष मुख पंच पुरारी।।

ब्रह्मवैवर्त पुराण के ब्रह्म खण्ड के अनुसार पंचमुख सदाशिव को श्रीकृष्ण से प्राकट्य वर्णित है। महाविष्णु का वर्णन भी देवी भागवत के नवें स्कन्ध अध्याय तीन में तथा ब्रह्मवैवर्त पुराणा के ब्रह्म खण्ड में महाविष्णु का वर्णन महाविराट के नाम से किया गया है।जिन महाविराट (महाविष्णु) के एक लोम कूप में असंख्यों ब्रह्माण्ड हैं। प्रति ब्रह्माण्ड में ब्रह्मा, विष्णु, महेश विद्यमान है। श्री राम चरित मानस में महाविष्णु कावर्णन निम्नलिखित चौपाई से सिद्ध होता है।

यथा - शिव, बिरंच, विष्णु भगवाना। उपजहि जासु अंश विधि नाना।।

इस प्रकार अनेको ब्रह्मा, विष्णु, महेश, महाविष्णु के एक लोम कूप में विद्यमान है। महाविष्णु के अन्दर ही असंख्यों ब्रह्माण्डों में यह एक ब्रह्माण्ड है, जिसमें ब्रह्माण्ड के विष्णु के चौबीस अवतार होते है। इस ब्रह्माण्ड के अन्तर्गत परमधाम का एक पल भी नहीं व्यतीत हुआ और यही पृथ्वी पर अट्ठाइसवें द्वापर का अन्त आ गया।

अट्ठाइसवें द्वापर के अंत में जिन ब्रह्मआत्माओं ने अक्षर ब्रह्म की स्वाप्निक दुखपूर्ण लीला देखने की इच्छा के कारण उनकी चित्तवृत्ति इस ब्रह्माण्ड में प्रवेश कर पृथ्वी पर ब्रजमंडल में गोपियों के रूप में प्रकट हुई। कृष्णानन्द सागर में इसका विस्तार से वर्णन है।

यथा - चौपाई -

चित्तवृत्ति सोई सखियन केरी। गोपी रूप से भई घनेरी।।

कूटस्थ अक्षर ब्रह्म परमधाम में सिहांसन आसीन जिन अक्षरातीत् परमात्मा श्रीकृष्ण और श्यामा जी महरानी के दर्शन करता है। उसी युगुल स्वरूप का अपने हृदय में चिन्तन करता है। अक्षर ब्रह्म भी अविनाशी है, इस कारण अक्षर ब्रह्म अपने हृदय में जिस स्वरूप का चिन्तन करता है और आनन्द मग्न होता है, उसी युगुल स्वरूप का बुद्धि में चिन्तन करने के कारण वह केवल धाम कहलाता है तथा हृदय नित्य गौलोक धाम कहलाता है।

गौलोक धाम में परमात्मा श्रीकृष्ण का स्वरूप श्री राधाकृष्ण के स्वरूप में विद्यमान है, जिसका वर्णन संहिताओं पुराणों में विस्तृत रूप से मिला है।

इसी गौलोक धाम से इस ब्रह्माण्ड के अन्दर समस्त शक्तिओं का आगमन हुआ, जैसे विरजा नाम की सखी, पृथ्वी पर यमुना में प्रकट हुई, इस पावन ग्रन्थ के अन्तर्गत ब्रह्मा, विष्णु, महेश तीनों देवता

ब्रह्माण्ड विवर से बाहर जाते हैं। महाविष्णु, सदाशिव को प्रणाम करते हुये गौलोक धाम पहुँचते हैं। गौलोक धाम में इन्होंने शतचन्द्रान्मा सखी को प्रणाम किया। सखी ने प्रश्न किया आप किस ब्रह्माण्ड के निवासी त्रय देव हैं। त्रयदेवों को निरउत्तर देख गौलोक नाथ की आज्ञा से, गौलोक धाम में प्रवेश करा गौलोक नाथ के दर्शन कराते हैं। जहाँ विराजमान अनेकों सिर के ब्रह्मा, अनेकों भुजाओं के विष्णु, अनेको सिर और नेत्रों के सदाशिव भी देखे, जिनको देखकर हमारे ब्रह्मा, विष्णु, महेश आश्चर्य चकित हो गये और हाथ जोड़कर उन प्रभु से विनय की हमारे ब्रह्माण्ड में आपका आगमन कब होगा। क्योंकि हे स्वामी पृथ्वी पर अनेको प्रकार के अत्याचार हो रहे हैं, जिनको मिटाने में हम सक्षम नहीं हैं। ऐसे दुष्टजनों के लिये आप अवश्य पधारें, ऐसा कहकर भगवान विष्णु परमात्मा श्रीकृष्ण के चरणें में अपना सिर झुकाकार प्रणाम करने लगे।

भगवान विष्णु की प्रार्थना सुनकर गौलोक नाथ ने त्रयदेवों को आश्वासन दिया कि मैं अट्ठाइसवें द्वापर के अंत में भूतल के ब्रज मंडल में नन्द यशोदा के यहाँ प्रकट होंगे। गौलोक नाथ के इस प्रकार आश्वासन देने पर वामांग में विराजमान राधाजी को स्वामी से वियोग न हो जाय, ऐसा विचार कर अपार कष्ट हुआ। श्रीकृष्ण जी ने राधा जी को सांत्वना देते हुये कहा कि हे राधे आपको पहले ही मैं पृथ्वी पर भेजूंगा, जिसका कारण ग्रन्थ के अन्तर्गत राधा जी ने श्रीदामा को शाप दिया। श्रीदामा ने स्वामिनी श्रीराधा को पृथ्वी पर श्रीकृष्ण से सौ वर्ष तक वियोगित रहने का शाप दिया। पृथ्वी पर श्री राधा जी को प्रसन्न करने हेतु गौलोक धाम की समस्त सामिग्री पृथ्वी पर चौरासी कोस ब्रज के रूप में प्रकट कर दी। इसी ब्रज भूमि में मथुरा मंडल है, जिसमें कंस के पूर्व जन्म का चरित्र तथा अत्याचार के साथ बहुत से असुरों के पूर्व चरित्र तथा अत्याचारों के कारण उनका उद्धार बड़े ही सरल ढंग से वर्णन है।

इस पावन ग्रन्थ के अन्तर्गत परमात्मा श्रीकृष्ण को त्रिधा लीला का वर्णन तत्व विवेचना युक्त है, जिसका वर्णन करना परमात्मा की कृपा के बिना असम्भव है, परन्तु श्री कृष्णानन्द सागर के अन्तर्गत रचनाकार अद्वितीय अध्यात्मक प्रेम विभोर होकर ज्ञान के साथ–साथ भक्ति की पुट देकर सागर का रूप दिया है।

परमात्मा श्रीकृष्ण का प्राकट्य का वर्णन बड़ा ही गहन मनन और शास्त्र युक्त है, जिसमें अक्षर ब्रह्म चित्तवृति अक्षरातीत परमात्मा श्रीकृष्ण का आवेश और गौलोक नाथ श्रीकृष्ण का कलेवर के साथ नन्द घर अर्ध रात्रि में वसुदेव जी द्वारा प्रवेश हुये, जिसका वर्णन संक्षेप में निम्नवत् हैः–

कारागार में प्रकट होने वाले भगवान विष्णु बैकुण्ठ नाथ है जो कि परमात्मा के आवेश रूप दिव्यातीत प्रकाश के साथ गौलोकी कलेवर में विलीन हो जाते हैं। जिसको वसुदेव यमुना में प्रवेश करते हैं। यमुना जी ने अपने स्वामी को पहचान लिया, जिसको प्रभु ने अपना चरण स्पर्श कराकर विशेष आनन्द प्रवाहित किया। नन्द जी के घर प्रवेश करने के पहले ही अक्षरातीत परात्मा श्रीकृष्ण के आवेश के साथ यशोदा जो कि मूर्छित अवस्था में थी, कृष्ण को लिटा दिया। शास्त्रों में आवेश अवतार का वर्णन आता है। श्री गर्गाचार्य जी ने छह प्रकार के अवतारों का वर्णन किया है।

यथा - अशांशोंस्शास्तथ स्वेशा कला, पूर्णः प्रकथ्यते।

(गर्ग0 सहिंता गौलोक खण्ड अ0 1)

गर्ग सहिता के अन्तर्गत तो स्पष्ट वर्णन आता है कि गौलोक के अन्दर भगवान विष्णु सांसारिक